पाब्लो नेरुदा की प्रेम कवितायेँ

Poemas de Amor por Pablo Neruda

Traducción en Hindi

por Manju Yadav

1

Si muero sobrevíveme con tanta fuerza pura que despiertes la furia del pálido y del frío,
de sur a sur levanta tus ojos indelebles,
de sol a sol que suene tu boca de guitarra.

No quiero que vacilen tu risa ni tus pasos,
no quiero que se muera mi herencia de alegría, no llames a mi pecho, estoy ausente.
Vive en mi ausencia como en una casa.

Es una casa tan grande la ausencia que pasarás en ella a través de los muros y colgarás los cuadros en el aire.

Es una casa tan transparente la ausencia que yo sin vida te veré vivir y si sufres, mi amor, me moriré otra vez.

2

"Vendrás conmigo" dije -sin que nadie supiera dónde y cómo latía mi estado doloroso,
y para mí no había clavel ni barcarola,
nada sino una herida por el amor abierta.

Repetí: ven conmigo, como si me muriera,
y nadie vio en mi boca la luna que sangraba,
nadie vio aquella sangre que subía al silencio.
Oh amor ahora olvidemos la estrella con espinas!

Por eso cuando oí que tu voz repetía
"Vendrás conmigo" -fue como si desataras
dolor, amor, la furia del vino encarcelado

que desde su bodega sumergida subiera
y otra vez en mi boca sentí un sabor de llama,
de sangre y de claveles, de piedra y quemadura.

अगर मैं मर जाऊ, मुझे जीवित रखना एक पवित्र ऊर्जा कि तरह ,
जो जगा सके ठंड और जर्द के आवेश को ,
प्रकाशित करो अपनी अमिट आँखों को, दक्षिण से दक्षिण तक,
सूर्य से सूर्य तक , जब तक कि तुम्हारा मुख, झनक ना उठे सितार की तरह। ।

मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी मुस्कराहटें और कदम डगमगाए,
मैं नहीं चाहता कि मेरी ख़ुशियों की जागीर ख़त्म हो जाए
मेरे सीने में आवाज़ ना दो, मैं वहां नहीं हूँ,
मेरी अनुपस्थिति में तुम उसी तरह जीना, जैसे एक घर में जिया जाये। ।

अनुपस्थिति कितना बड़ा घर है ना
कि तुम दीवारों को पकड़ कर घूमोगी
और तस्वीरों को पारदर्शी हवाओं में टाँगोगी।

अनुपस्थिति कितना पारदर्शी घर है ना,
मरकर भी मैं तुम्हारा जीना देखूँगा ,
और अगर तुम तकलीफ़ में होगी, मैं एक बार फिर मर जाऊँगा। ।

"मेरे साथ चलोगे " कहा मैंने - बिना किसी को भनक लगे,
कहाँ और कैसे मेरे दर्द भरे हालत जाग गए।
और मेरे लिए कोई गुलनार, कोई विरह गीत ना हुए ,
कुछ नहीं, सिवाय एक ज़ख्म के जो प्रेम ने उघेड़ दिए। ।

दोबारा सुनो; चलो मेरे साथ , जैसे कि मैं मृत्यु के करीब होऊंगा ,
पर किसी ने मेरे मुँह में झांककर चाँद ना देखा जो लहूलुहान था ,
ना किसी ने वह रक्त देखा जो खामोशियों में उपजा था ,
ओह प्रेम ; अब हम भुला देंगे उस सितारें को जिसमे काटें हुए।

और इसलिए , जब मैंने सुना तुम्हारी आवाज़ को दोहराते हुए ,
"मेरे साथ चलोगे" लगा तुमने ढीले कर दिए, मेरे बंधन
दर्द, प्यार, - रोष छूटा हो ज्यूँ ढक्कन बंद शराब की बोतल का।

कि जैसे लावा फूटा हो ज्वालामुखी के अंतर्मुख से ,
और एक बार फिर मैंने अपने मुख में, महसूस किया आग के स्वाद को
लहु को और लाल फूलों को ,
पत्थरों को और ज्वलनशीलता को। ।

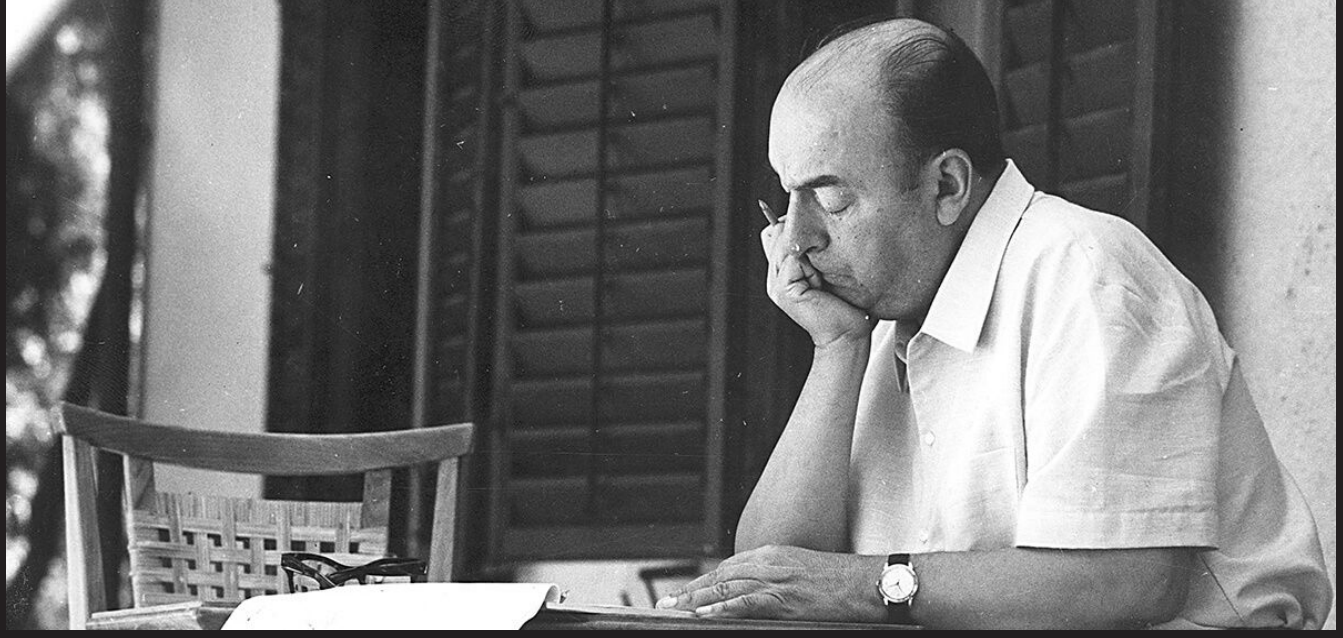

3

Recordarás aquella quebrada caprichosa
a donde los aromas palpitantes treparon,
de cuando en cuando un pájaro vestido
con agua y lentitud: traje de invierno.

Recordarás los dones de la tierra:
irascible fragancia, barro de oro,
hierbas del matorral, locas raíces,
sortílegas espinas como espadas.

Recordarás el ramo que trajiste,
ramo de sombra y agua con silencio,
ramo como una piedra con espuma.

Y aquella vez fue como nunca y siempre:
vamos allí donde no espera nada
y hallamos todo lo que está esperando

4

No te toque la noche ni el aire ni la aurora,
sólo la tierra, la virtud de los racimos,
las manzanas que crecen oyendo el agua pura,
el barro y las resinas de tu país fragante.

Desde Quinchamalí donde hicieron tus ojos
hasta tus pies creados para mí en la Frontera
eres la greda oscura que conozco:
en tus caderas toco de nuevo todo el trigo.

Tal vez tú no sabías, araucana,
que cuando antes de amarte me olvidé de tus besos
mi corazón quedó recordando tu boca

y fui como un herido por las calles
hasta que comprendí que había encontrado,
amor, mi territorio de besos y volcanes.

तुम याद करोगी, उन मचलते झरनों को ,
जहाँ वो खुशबुएँ उठी और कैद हो गई ,
जब तब एक पंक्षी, पानी और मंदता, का वस्त्रों में ,
और अपने सर्दियों के कोट में। ।

तुम याद करोगी , धरती के उन उपहारों को ,
न मिट सकने वाली सुगंध, सोने कि ईट,
कुम्भियों के झुरमुट , और पागल जड़ें ,
जादुई काटें जो थे तलवारों जैसे। ।

तुम याद करोगी , वो गुच्छा जो तुम ले आयी ,
वो छाया , और वो खामोश पानी ,
गुच्छा जो झाग में ढका कोई पत्थर था।

और वैसा पल पहले कभी ना हुआ , पर जैसे हमेशा था ,
इसलिए हम वहां जाते हैं , जहां कुछ भी इंतजाररत नहीं
हम वहां वो सब पा लेंगे जिसका हमे इंतजार था। ।

मैंने तुम्हारी रातों को थाम के नहीं रखा है,
ना ही तुम्हारी हवा को या की तुम्हारी सुबह को
बस धरती, फलों का सच जो गुच्छे में है,
सेव जो गदरा जाते है मीठा पानी पीकर
मिट्टी और राल जो तुम्हारी धरती की सौंधी महक है।

किञ्चमालि से, जहाँ तुम्हारी आँखो से लेकर
तुम्हारे पैर मेरे लिए फ्रॉन्टेरा में तरासे गए
तुम मेरी वही जानी पहचानी काली मिट्टी हो ;
तुम्हारे कूल्हों को छूकर मैं एक बार फिर गेहूं के खेतो को छू लेता हूँ।

अरकूनियन स्त्री, शायद तुम यह नहीं जानती,
कि तुम्हें प्रेम करने से पहले, मैं तुम्हारे सारे चुंबनों को भूल गया।
लेकिन मेरे हृदय में तुम्हारे मुख का एहसास निरंतर रहा।

और मैं रास्तों पर एक घायल पुरुष कि तरह भटकता रहा,
जबतक कि मैंने प्रेम को समझ न लिया; मैंने पा ही लिया मेरी जगह,
एक धरती जो चुम्बनों और ज्वालामुखियों कि जगह है। ।